प्रो. सुरजनदासजी स्वामी

पं. नवीन जोशी

श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के गौरव प्रथम स्नातक श्री सुरजनदासजी स्वामी साहित्याचार्य, वैयाकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य, सांख्याचार्य इत्यादि उपाधि से विभूषित स्वामीजी का जीवन वृतान्त संवत् 1976 में जमात उदयपुर निवासी पंच श्री गीधारामजी से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्हीं की सेवा में अक्षराभ्यास भी वहीं प्रारंभ किया प्राणाचार्य आयुर्वेदमार्तण्ड स्वामी श्री लक्ष्मीरामजी महाराज के सतत् प्रयत्नों से संस्थापित श्री दादू महाविद्यालय की स्थापना होने पर संवत् 1977 से आप इस विद्यालय में पढ़ने के लिए जयपुर आ गये, उसी दिन से जीवनपर्यन्त आप सारस्वत साधना में लीन रहें, श्री दादू महाविद्यालय के प्रथम स्नातक के रूप में आने साहित्य शास्त्री संवत् 1985 तथा व्याकरणशास्त्री संवत् 1987 में उत्तीर्ण की इसके पश्चात् साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य, सांख्यायोगाचार्य आदि परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की, इस प्रकार पारंपरिक संस्कृत भाषा का अध्ययन समाप्त कर आने हाई स्कूल, इन्टर, बी.ए. तथा एम.ए. की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की। साहित्याचार्य परीक्षायें सर्वप्रथम रहने के कारण महाराणा भूपालसिंह स्वर्णपदक द्वारा सम्मान्वित किया गया। एम.ए. में सर्वप्रथम रहने के कारण स्वर्ण पदक महाराजा कॉलेज से नार्थ बुक रजत पदक तथा विद्यालय के दशम वार्षिकोत्सव में महाविद्यालय विद्यार्थीयो में सर्वप्रथम रहने पर 'श्री लक्ष्मीराम स्वर्णपदक' से सम्मानित हुए।

कार्य प्रारंभ :

मध्यमा (उपाध्याय) परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही आप अध्यापक हो गये सन् 1931 के जून मास के सहायक अध्यापक के रुप में आपने कार्य प्रारंभ किया। सन् 1937 में तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री विलियम ओवन्स के आग्रह पर एक वर्ष तक खेतड़ी संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य किया। सन् 1942 मई से सन् 1946 जुलाई तक दादू महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के रुप में कार्य किया। अगस्त 1946 से अक्टूबर 1948 तक इण्डियन मेडिसन बोर्ड के रजिस्टार पद पर रहे, सन् 1948 नवम्बर से सन् 1950 जनवरी तक महाराज कॉलेज जयपुर में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर पद पर इसी क्रम में जुलाई 1952 तक सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्य किया। 1952 के पश्चात् राज. महाविद्यालय किशनगढ़ में संस्कृत विभागाध्याक्ष, फिर राजर्षि कॉलेज अलवर में संस्कृत

विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। सन् 1961 के नवम्बर में आपका स्थानान्तरण डूंगर कॉलेज, बीकानेर में संस्कृत विभागाध्यक्ष के पद पर हुआ। जहाँ से एक वर्ष पश्चात् ही स्थानान्तरित होकर राजकीय महाविद्यालय अजमेर में संस्कृत विभागाध्यक्ष बनाये गये। सन् 1966 ई. से आप जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग में रीडर के पद पर कार्य किया। आप अपने समय के सर्वश्रेष्ठ अध्यापक हुए हैं। स्वामीजी के अनेक शिष्य राजस्थान व अन्य प्रांतो में संस्कृत व्याख्याताओं के रुप में सेवा संलग्न हैं।

श्रद्धेय स्वामी जी ने 4 वर्ष तक महामहोपदेशक विद्यावाचस्पति पं. श्री मधुसूदनजी महाराज की सेवा में रहकर वेद विद्या व वैदिक कर्मकाण्ड का भी अध्ययन किया हैं। उनके दिवंगत होने पर उनके सुपुत्र पं. प्रद्युम्न झा के आदेश से उनके ग्रन्थों का सम्पादन किया था। अनके ग्रंथो की हिन्दी व्याख्यायें भी प्रस्तुत की गई है। आप वैदिक विज्ञान विषय के निरन्तर प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे हैं। वाणी तथा दर्शन नामक पुस्तक तथा दादूवाणी की सामान्य भूमिका भी लिखी जो लगभग शत् पृष्णनुमानित हैं। एक वर्ष 6 माह तक आपने 'भारती' संस्कृत पत्रिका का सम्पादन किया। आपको भारती पत्रिका के प्रथम सम्पादन के रुप में याद किया जाता हैं। आपने 4 वर्ष से अधिक समय तक राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री पद पर कार्य किया। आप अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन व राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सर्वाधिक सक्रिय सदस्य व उपाध्यक्ष रहे हैं। राजस्थान शिक्षा सलाहकार मण्डल के सम्मनित सदस्य भी रह चुके हैं।

आपका रचनात्मक कार्य इस रुप में प्रस्तुत किया जा रहा हैं–

क्र.सं.	**नाम रचना**	**प्रकाशन विवरण**
1.	सत्यकृष्णं रहस्य (सम्पादन मात्र)	वि.सं. 1949
2.	निरुढपशुबन्ध (सम्पादन मात्र)	वि.सं. 1949
3.	वैदिकापाख्यान (सम्पादन मात्र)	वि.सं. 1950
4.	पदनिरुक्त (हिन्दी सारांश सहित सम्पादन)	वि.सं. 1950
5.	देवासुरख्याति (हिन्दी सारांश सहित सम्पादन)	वि.सं. 1951
6.	आधिदैविकाध्याय (हिन्दी सारांश सहित सम्पादन)	वि.सं. 2007
7.	आशौच पंजिका (हिन्दी सारांश सहित सम्पादन)	वि.सं. 2008
8.	पुराणोत्पत्ति संग्रह (हिन्दी व्याख्या सहित सम्पादन)	वि.सं. 2008

9.	मन्वन्तर निर्धारः (हिन्दी व्याख्या सहित सम्पादन)	वि.सं. 2021
10.	यज्ञोपवीत विज्ञान (हिन्दी व्याख्या सहित सम्पादन)	वि.सं. 2021
11.	सन्ध्योपासना रहस्य (स्वतंत्र ग्रन्थ)	वि.सं. 2021
12.	पथ्या स्वस्ति (हिन्दी सारांश सहित सम्पादन)	वि.सं. 2016

आपने अपने गुरु विद्यावाचस्पति श्री मधुसूदनजी ओझा के उपर्युक्त साहित्य का सम्पादन व प्रकाशन किया है। श्री ओझाजी के उल्लेखनीय शिष्यों में श्री सुरजनदासजी ही ऐसे शिष्य हैं, जो उनके साहित्य का प्रकाशन मनोयोग पूर्वक कर रहे हैं। वास्तव में आपका यह कार्य जयपुर के संस्कृत-साहित्य के इतिहास में उल्लेखनीय है। आप उनके वैदिक विज्ञान पर साधिकार व्याख्यान दिया करते हैं और वह सभाजनों को अत्यन्त मुग्ध कर देता है। इस प्रकार आप एक कुशल अध्यापक के रूप में भी उल्लेखनीय हैं, जिनके अनेक छात्र राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणि में तथा सर्वप्रथम रूप में उत्तीर्ण होने के कारण स्वर्ण पदक से सम्मानित किये गए हैं।

आपके अनेक शोधपूर्ण निबन्ध भी विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इनका विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया।

क्र.सं.	**नाम लेख**	**प्रकाशन विवरण**
1.	वेदेषु विज्ञानम्	संस्कृत साहित्य सम्ममेलन सन् 1967-संस्कृत में
2.	चारके दर्शनम्	संस्कृत रत्नाकर आयुर्वेदांक में प्रकाशित - 1940
3.	स्वभावोक्तेरलंकाररित्वप्रतिपादनम्	संस्कृत साहित्य सम्मेलन स्मारिका
4.	अभिनवगुप्तरीत्यास्वरूपनिरूपणम् (रहस्य)	राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन उदयपुर, 1968
5.	शान्तोऽपि नवमो रसः	राजकीय महाविद्यालय कोटा पत्रिका, 1959
6.	वेदेषु मनस्तत्वम्	संस्कृत रत्नाकर वेदांक में प्रकाशित
7.	दर्शनदर्शनम्	रा.सं.सा. सम्मेलन 1965 दर्शन परिषद अध्यक्षीय भाषण
8.	गंगायाः वैज्ञानिकस्वरूपनिरूपणम्	संस्कृत रत्नाकर 2415 में प्रकाशित
9.	वेदेषु इतिहास	संस्कृत रत्नाकर 2715 में प्रकाशित
10.	देवो देवता च	संस्कृत रत्नाकर 2715 में प्रकाशित
11.	रसस्वरूपनिरूपणम्	राजकीय महाविद्यालय कोटा पत्रिका

12.	काव्यलिंग तथा अर्थान्तरन्यास भेद	विश्वम्भरा शोध पत्रिका 1963-64
13.	वैश्वानरस्वरूप प्रतिपादनम्	विश्वम्भरा शोध पत्रिका 1968
14.	ऋषि छन्द व देवता स्वरूप विवेचन	स्वाहा पत्रिका रा.प्रा.वि. प्रतिष्ठान, जोधपुर
15.	वेदाः विज्ञानं च	रा.सं.सा. सम्मेलन 13वां अधिवेशन वेदपरिषद् अध्यक्षीय भाषण
16.	साधारणीकरणम्	प्रकाश्यमान इत्यादि

शोध छात्र,
पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान,
जयपुर